



**INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH –
GRANTHAALAYAH**
A knowledge Repository



जैव विविधता एवं संरक्षण

निशा पंवार

मातुश्री अहिल्यादेवी टीचर्स एज्युकेशन इंस्टीट्यूट, सुल्लाखेडी, इन्दौर



प्रस्तावना

पृथ्वी अपने में असीम संभावनाएं एकत्रित किये हुए है । प्रकृति के अनेकानेक विविधताओं की कल्पना कर ही इस बात का पता लगाया जा सकता है कि संभावनाएं पक्ष की है या विपक्ष की तात्पर्य पृथ्वी पर अथाह कृषि भूमि, जल वृक्ष, जीव-जन्तु तथा खाद्य पदार्थ थे, परन्तु मानव के अनियंत्रित उपभोग के कारण ये सीमित हो गये हैं । पर वास्तव में हम अपने प्रयासों से इन संपदाओं का उचित प्रबंध कर इसे भविष्य के लिए उपयोगी बना सकते हैं ।

जैव विविधता किसी दिये गये पारिस्थितिकी तंत्र बायोम, या एक पूरे गृह में जीवन के रूपों की विभिन्नता का परिणाम है । जैव विविधता किसी जैविक तंत्र के स्वास्थ्य का घोटक है ।

जैव विविधता का अर्थ एवं परिभाषा

पृथ्वी पर उपस्थित अनेक प्रकार के जीव-जन्तु में उनके प्रकार, व्यवहार, जीवन-चक्र और प्रकृति में उनका योगदान । ब्लू व्हेल मछली से लगाकर सूक्ष्मदर्शी जीवाणु मनुष्य से लेकर फफून्द और सैकड़ों लाखों की संख्या में बिखरा प्रकृति का यह जीवित खजाना मनुष्य के विकास का गवाह है । जीव मंडल में समस्त पाये जाने वाले पौधे, जीवों तथा जन्तुओं के मध्य विभिन्नता को प्रदर्शित करना है ।

सन् 1986 में वाल्टर जी रॉसेन ने जैव विविधता पद की परिभाषा निम्न रूप से दी-

पादपों (Plants) जन्तुओं (Animal) और सूक्ष्मजीवों के विविध प्रकार और विभिन्नता ही जैव विविधता है ।

जैव विविधता का संरक्षण

जैव विविधता का संरक्षण और उसका निरंतर उपयोग करना भारत के लोकाचार का एक अंतरंग हिस्सा है । भौगोलिक और सांस्कृतिक विशेषताओं ने मिलकर जीव-जन्तुओं की इस अद्भूत विविधता में योगदान दिया है जिससे हर स्तर पर अपार जैविक विविधता देखने को मिलती है । भारत में दुनिया का केवल 24 प्रतिशत भू-भाग है जिसके 7 से 8 प्रतिशत भू-भाग पर विश्व की विभिन्न प्रजातियां पाई जाती है । विश्व के 11 प्रतिशत मुकाबले भारत में 44 प्रतिशत भू-भाग फसले बोई जाती है । भारत के 23.39 प्रतिशत भू-भाग पर पेड़-पौधे और जंगल फैले हुए हैं । भारत में जैव विविधता के 3 हॉट स्पॉट हैं जैसे हिमालयभारत, बर्मा, श्रीलंका और पश्चिमी घाट । यह वनस्पति और जीव-जन्तुओं के मामले में बहुत समृद्ध है । पर्यावरण के अहम मुद्दों में से आज जैव विविधता का संरक्षण एक अहम मुद्दा है । विश्व की जैव विविधता को कई कारणों से चुनौती मिलती है । राष्ट्रों, सरकारी एजेन्सियों और संगठनों तथा व्यक्तिगत स्तर पर जैव विविधता के संवर्धन और उसके संरक्षण की बड़ी चुनौती है । चारों ओर से जैव विविधता को बचाने का अभियान चलाया गया है ।

जैव विविधता अधिनियम 2002

जैव विविधता अधिनियम 2002 भारत में जैव विविधता के संरक्षण के लिए संसद द्वारा पारित एक संघीय कानून है जो परम्परागत जैविक संसाधनों और ज्ञान के उपयोग से होने वाले लाभों के समान वितरण के लिए एक तंत्र प्रदान करता है ।

राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण (एनबीए)

की स्थापना 2003 में जैव विविधता अधिनियम 2002 को लागू करने के लिए की गई थी । एनबीए एक संविधिक, स्वायत्त संस्था है । यह संस्था जैविक संसाधनों के साथ-साथ उनके सतत् उपयोग से होने वाले लाभ की निष्पक्षता और समान मुद्दों पर भारत सरकार के लिए सलाहकार और विनियामक की भूमिका निभाती है ।

जैव विविधता के स्तर

समुद्री जैव विविधता समुद्र और महासागरों से पलने वाले जीवन को दर्शाता है । समुद्री पर्यावरण में 33 प्रतिशत वर्णित जन्तु संघों में से 32 जन्तु संघ पाये जाते हैं इसलिए इसका स्तर बहुत ऊँचा है । वन जैव विविधता में वन क्षेत्रों में पाये जाने वाले सभी जीव-जन्तु है जो कि पर्यावरण में पारिस्थितिक भूमिका निभाते हैं । पारिस्थितिक तंत्र विविधता के रहने वाले स्थानों के कई अलग-अलग प्रकारों के बारे में इंगित करती है जबकि कृषि जैव विविधता में मिट्टी, जीव, कीट परभक्षी और देशी पौधों तथा पशुओं के सभी प्रकार और कृषि से संबंधित सभी प्रासंगिक जीवन के रूप शामिल है ।

जैव विविधता का संरक्षण

(1) स्वस्थाने संरक्षण (Institute Conservation) – इस विधि में जन्तुओं तथा पौधों का संरक्षण उनके प्राकृतिक आवासों में किया जाता है । इस विधि को अधिक उपयुक्त समझा गया है इस कारण ही अनेक क्षेत्रों को जैसे राष्ट्रीय उद्यान, पशु-विहार आदि सुरक्षित स्थल बनाया गया है ।

(2) उत्स्थाने संरक्षण (Ex Situ Conservation) – इसमें महत्वपूर्ण पौधों तथा जन्तुओं को उनके प्राकृतिक आवासों से वनस्पति उद्यान शोधशालाएँ आदि ।

विश्व में जीवों की प्राकृतिक रूप में लाभकारी अनेक प्राजातियाँ मिलती हैं, कुछ विशेष लक्षणों वाली महत्वपूर्ण जातियाँ सीमित आवासों में पाई जाती हैं उनके जर्मप्लाज्म को भी सुरक्षित रखना आवश्यक है जिससे भविष्य में उसका उपयोग मानवहित में किया जा सकें ।

(3) जीन बैंक (Gene Bank): यह संस्थान उपयोगी तथा महत्वपूर्ण पौधों के जर्मप्लाज्म को सुरक्षित रखता है । इसमें बीज, अण्डे, कोशिकाएँ, परागकण आदि को सुरक्षित रखा जा सकता है ।

बायोस्फीयर और जैव विविधता भंडार

भारत सरकार ने देशभर में 18 बायोस्फीयर भंडार स्थापित किये हैं जो जीव-जन्तुओं के प्राकृतिक भू-भाग की रक्षा करते हैं और अकसर आर्थिक उपयोगों के लिए स्थापित बफर जोनों के साथ एक या ज्यादा उद्यान और अभ्यारण्य को संरक्षित रखने का काम करते हैं ।

जैव विविधता के संरक्षण के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रयास

वन्य जीव-जन्तु और फ्लोरा की विलुप्त प्राय प्राजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सम्मेलन-सीआईटीईएस पर 3 मार्च 1973 को वांशिंगटन डीसी में हस्ताक्षर किये गये थे । सीआईटीईएस का उद्देश्य वन्य जीव के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर प्रतिबंध लगाना है । खाद्य और कृषि के लिए पादत आनुवांशिक संसाधन पर अंतर्राष्ट्रीय खाद्य संधि पर नवम्बर 2001 में रोम में हस्ताक्षर किये गये थे जिसे कृषि के लिए एक कानूनी रूप से बाह्यकारी रूपरेखा बनाने के लिए अपनाया गया था जैव विविधता पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (1992) एक बहुपक्षीय संधि है इस संधि के तीन मुख्य लक्ष्य हैं – जैसे जैविक विविधता का संरक्षण उनके घटकों का निरन्तर प्रयोग और उनसे होने वाले लाभ के निष्पक्ष और समान वितरण शामिल है ।

जर्मप्लाज्म संरक्षण में विश्व स्वास्थ्य संगठन (World Health Organization WHO) , यूनेस्को (UNESCO), विश्व बैंक (WB) मानव तथा जीवमण्डल (MAB) तथा जीव-मण्डल रिजर्व प्रोग्राम (BRP) आदि संस्थाएँ रूचि ले रही है ।

निष्कर्ष

पारिस्थितिकीय विकास की दृष्टि से जैव विविधता का संरक्षण करना अनिवार्य है । भूमि, जल, वायु, जीव-जन्तु व पौधे हमारी प्राकृतिक सम्पदायें है । यदि इन प्राकृतिक सम्पदाओं का दुरुपयोग और उन्हें हानि पहुँचाते है तो प्राकृतिक असंतुलन की स्थिति पैदा होती है जिससे अनेक संकट पैदा होते है । अतः इन सम्पदाओं का सुनियोजित संरक्षण करना चाहिए ।

सन्दर्भ

1. वर्मा, धनंजय, पाण्डेय शशिप्रभा (2009) "पर्यावरण चेतना", मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
2. वर्मा, जी.एस. (2005) "पर्यावरण शिक्षण", इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ
- 3- गुरुपंच, के.एस. (2014) छत्तीसगढ़ में जैव विविधता एवं संरक्षण, *Research Journal of Humanities and social science*. Vol. 05 (3), P-275
4. <http://en.m.wikipedia.org>